# गीतिका

डॉ. बिपिन पाण्डेय

**आदमी आधार अपना खो रहा देखो।**
कंटकों को मार्ग में अब बो रहा देखो।।1

इश्क जिसने भी किया है हुस्न वालों से,
बैठ कोने में कहीं पर रो रहा देखो।2

की कमाई थी अगर ईमानदारी से,
नींद गहरी आज वह ही सो रहा देखो ।3

जिंदगी भर जो करे दुष्कर्म दुनिया में
पाप गंगा में वही तो धो रहा देखो।4

हाथ में पासा लिए बैठे शकुनि सारे,
खेल कैसा हर कहीं पर हो रहा देखो।5

जो मिला है जिन्दगी में बिन शिकायत,
भाग्य अपना मानकर हर ढो रहा देखो।6

**लिख रहा हूँ गीतिका माँ प्यार के कारण।**
लेखनी चलती नहीं व्यापार के कारण।।1

शब्द मधुरिम भावमय हैं युग्म सब मेरे,
यह हुआ बस मातु के उपकार के कारण।2

चाँद दिखता है मुझे तो शक्ल में उनकी,
लग रहा ऐसा मुझे अभिसार के कारण।3

अब भरोसा है नहीं देखो किसी पर भी,
हो रहा ऐसा महज व्यभिचार के कारण।4

दे तिलांजलि चल रहे संबंध अब सारे,
अर्थ हावी हो गया बाजार के कारण।5

आ ही' जाता है कभी संबंध में पतझड़,
दूर जा पाता नहीं मनुहार के कारण।6

रूप तो देखा नहीं है हूँ अपरिचित मैं,
प्रेम दीपक जल उठे उद्गार के कारण ।7

**बरसती नित नई हर छंद की रसधार को देखा।**
नहीं जग ने हमारी शब्द से मनुहार को देखा।।1

बनाया प्रेम का रिश्ता खुशी बाँटी सदा जग को,
चला हूँ साथ ले सबको नहीं व्यवहार को देखा।2

दुकानें खोलकर बैठे सभी अब हर तरफ ढोंगी,
पनपते धर्म के कलुषित यहाँ व्यापार को देखा।3

सबल सक्षम दुलारा है बधाई दें सभी उसको,
कभी मुड़कर नहीं जग ने किसी लाचार को देखा।4

लगा विद्वान के पीछे जिसे प्रिय ज्ञान की बातें,
फँसा जो मोह माया में सदा घर द्वार को देखा। 5

नहीं खुशियाँ पुरानी ढूँढते हैं लोग अक्सर अब,
मनाते नाम को हैं सब यहाँ त्योहार को देखा ।6

बताना क्या दिखाना क्या लगी तस्वीर सीने में,
नहीं जिसने वतन के प्रति हमारे प्यार को देखा। 7

**पुष्प सारे सुबह में महकने लगे।**
राग नूतन लिए खग चहकने लगे।।1
शाम आई सुहानी सताने लगी,
साथ प्रीतम बिना दिल मचलने लगे। 2

ज्वार सुधियाँ उठाएँ प्रणय की हृदय,
मोम-सा दिल हमारा पिघलने लगे। 3
गीत भावों भरे मैं सुनूँ जब कभी,
प्रेम को याद कर अश्रु झरने लगे।4

बीतता जा रहा है समय अब नहीं,
भाव ऐसे पटल पर उभरने लगे।5
साथ सद्ग्रंथ हों दूर रहता पतन,
भाव उर में लिए हम निखरने लगे।6
नाम महिमा सुनी है जगत में बहुत,
नित्य हम भी प्रभो को सुमिरने लगे।7


ISSN:2583-8849